भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 | **अगस्त** 2001 | **अंक** 8

स्मरण तीर्थ

साहित्यिक, सांस्कृतिक पत्रकार रतनलाल जोशी

सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का बोध कराने वाले 86 वर्षीय पत्रकार **रतनलाल जोशी** नहीं रहे। 27 जून 2001 को दिल्ली में उनका निधन हो गया। 19 जून 1916 को मध्य प्रदेश में उनका जन्म हुआ। प्रयाग विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम०ए० किया। मुम्बई में 'आवाज' साप्ताहिक से पत्रकार-जीवन का शुभारम्भ किया। राष्ट्रनायकों की वाणी से जनता में राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करने के लिए मैं जवाहरलाल बोलता हूँ, मैं सुभाषचंद्र बोलता हूँ स्तंभ आरम्भ किये।

1952 में हिन्दी का प्रथम डाइजेस्ट 'नवनीत' का सम्पादन किया। वास्तव में वह कला, साहित्य, संस्कृति का 'नवनीत' ही था। आठ वर्ष तक उनके द्वारा सम्पादित किये गये प्रत्येक अंक मंजूषा है, जिनकी कुछ वर्षों की फाइलें आज भी सुरक्षित हैं, जिनसे ऊर्जा और प्रेरणा मिलती हैं। 'नवनीत' सम्पादन के दौरान मुम्बई में उनके कार्यालय में मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य मिला था। पूरे सम्पादक मण्डल से उन्होंने परिचय कराया और सुमधुर आतिथ्य प्रदान किया। 'नवनीत' के बाद हिन्दी पत्रिका 'सारिका' का सम्पादन किया। 1963 में दिल्ली में दैनिक 'हिन्दुस्तान' के सम्पादन का दायित्व ग्रहण किया। 1976 तक दैनिक हिन्दुस्तान का सम्पादन करते रहे। प्रत्येक रविवार को अपने ललित एवं सारगर्भित लेखों में संस्कृत, हिन्दी तथा उर्दू साहित्य का नवनीत प्रस्तुत करते थे। भारतीय संस्कृति और महापुरुषों के संबंध में उनका लेखन साहित्य की धरोहर है।

काशी मुमुक्षु भवन सभा की पत्रिका 'मुमुक्षु' के सम्पादन काल में जोशीजी ने अनेक सांस्कृतिक लेख प्रदान किये। 'हिन्दुस्तान' के सम्पादन काल में प्रतिदिन मध्याह्न जोशीजी सस्ता साहित्य मण्डल कार्यालय में चाय पीने आते थे। वहीं पुन: जोशीजी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भारत सरकार ने 1970 में जोशीजी को 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। आज वे हमारे स्मरण तीर्थ हैं।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

पुस्तक वर्ष
2001-2002
सबके लिए पुस्तकें और पुस्तकों के लिए सब

भारत सरकार ने 23 अप्रैल 2001 से प्रारम्भ वर्ष 2001-2002 को पुस्तक वर्ष घोषित किया है। सरकार की यह घोषणा भी अन्य घोषणाओं की भाँति कागजी और अप्रभावी बनकर रह गई है। नारा है सबके लिए पुस्तकें और पुस्तकों के लिए सब। किन्तु सरकार के संचार मंत्रालय ने पुस्तकों को सबसे दूर कर दिया है। 1 जून 2001 से डाक व्यय में अभूतपूर्व वृद्धि कर दूरस्थ पाठकों के लिए पुस्तक प्राप्त करना अत्यधिक व्यय साध्य कर दिया है। पुस्तकों के 1 किलो वजन पर लगने वाला डाक व्यय 5 रुपये से एकदम 10 रुपये कर दिया, रजिस्ट्री शुल्क 14 रुपये से 17 रुपये। लिफाफा तीन रुपये से चार रुपया और बुकपोस्ट (सूची पत्र आदि के लिए) दो रुपये से तीन रुपये।

देश के अधिसंख्य पाठक ऐसे स्थानों पर रहते हैं जहाँ उन्हें मनचाही पुस्तकें नहीं मिलतीं। उनके लिए डाक द्वारा पुस्तक प्राप्त करना ही एकमात्र साधन है।

आज श्रव्य दृश्य माध्यम पुस्तकों के लिए चुनौती बने हुए हैं, ऐसे में पुस्तकों को पाठकों से दूर करना कितना न्याय संगत है। स्वाध्याय द्वारा ही मानव संसाधन शक्ति की वृद्धि सम्भव है। इसे प्रोत्साहन की अपेक्षा है। पुस्तक एक वस्तुमात्र नहीं है, यह एक बौद्धिक रचना है जो कितने मस्तिष्क को ज्ञान और ऊर्जा प्रदान करती है।

पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत करने तथा संवेदना के विकास के लिए यह आवश्यक है कि छात्रों में पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाय ताकि उनमें कारयित्री प्रतिभा का सृजन हो। आज वस्तुस्थिति यह है कि शिक्षा संस्थाओं के पुस्तकालय पाठ्य-पुस्तकों के संग्रहालय बन गये हैं। बुक बैंक के नाम पर पुस्तकालयों में सस्ती पाठ्य-पुस्तकें, कुंजी तथा गाइडें भर दी जाती हैं। किसी विद्यार्थी से उसके नगर के किसी प्रसिद्ध साहित्यकार अथवा उसकी रचना के विषय में पूछिए, तो वह अनभिज्ञता प्रगट करेगा। कहा जाता है 'चैरिटी बिगिन्स एट होम' शिक्षा तथा साहित्य के सम्बन्ध में भी यह सत्य है कि विद्यार्थी पहले अपने नगर के साहित्यकारों और उनके साहित्य को जाने। इस अवसर पर साहित्यकारों, रचनाकारों से छात्रों, पाठकों का साक्षात्कार कराया जाय ताकि उनमें अध्ययन की प्रेरणा जागृत हो और प्रतिभाजन्य ज्ञान के द्वार उन्मुक्त हों।

प्रत्येक स्कूल-कालेज, विश्वविद्यालय को पाठ्येतर पुस्तकों के क्रय के लिए अधिकाधिक अनुदान दिया जाय। ऐसी पुस्तकें पाठकों तथा छात्रों के समक्ष प्रदर्शित की जायँ। इससे पठन अभिरुचि का विकास होगा।

बच्चों को जिस प्रकार खिलौने प्रिय हैं रंग-बिरंगी सचित्र पुस्तकें उनके मन को लुभाती हैं। पुस्तकें उनके लिए बोलती हैं, उनके मन में छवि उकेरती हैं।

'पुस्तक वर्ष' को कैसे सफल बनायें यह सरकार को सोचना है। अशिक्षा आज देश का सबसे बड़ा अभिशाप है।

अशिक्षित समाज को राजनीतिज्ञ नेता छोटे-छोटे खेमों में बाँट रहे हैं, अबोध पशुओं की भाँति हाँक रहे हैं और निजी स्वार्थ के लिए उनकी बलि चढ़ा रहे हैं। दलितों को पददलित बनाया जा रहा है। शिक्षा के बिना जनतंत्र की कल्पना बेमानी है, जन-जन को शिक्षित कीजिए, उनका विवेक जागृत कीजिए और एक स्वस्थ तथा विकासशील राष्ट्र के निर्माण में अग्रसर होइये।

पुरस्कार-सम्मान

त्रिपुरा साहित्य पुरस्कार

त्रिपुरा सरकार ने वर्ष 2000 के लिए प्रमुख साहित्यकार **अपराजिता राय** तथा **चन्द्रकान्ता मुरासिंह** को रवीन्द्र पुरस्कार के लिए चयन किया है, जबकि राज्य के पूर्व स्वास्थ्यमंत्री **बिमल सिन्हा** को मरणोपरान्त नजरुल पुरस्कार से सम्मानित किया जायगा। श्री सिन्हा की उग्रवादियों ने 31 मार्च 1993 में हत्या कर दी थी। इन पुरस्कारों में दस हजार रुपये नकद और प्रशस्तिपत्र दिया जायगा।

संस्कृत पुरस्कार

संस्कृत के जाने माने विद्वान् **डॉ० सिद्धार्थ वाकंकर** को इस वर्ष के रामकृष्ण संस्कृत अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुना गया है। सरस्वती विश्वास कनाडा फाउंडेशन द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला यह पुरस्कार डॉ० वाकंकर को संस्कृत भाषा और साहित्य में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जा रहा है।

डॉ० कपिला वात्स्यायन को राजीव सद्भावना पुरस्कार

प्रख्यात संस्कृतिकर्मी एवं विदुषी **डॉ० कपिला वात्स्यायन** को देश की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में उल्लेखनीय योगदान के लिए राजीव गाँधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार दिया जाएगा।

डॉ० वात्स्यायन को यह पुरस्कार दिल्ली में 20 अगस्त को दिया जाएगा।

वरिष्ठ साहित्यकार शिवानी सम्मानित

सुप्रसिद्ध कहानी, उपन्यास, संस्मरण लेखिका **गौरापंत 'शिवानी'** को सम्मानित करते उत्तरांचल राज्य के मुख्यमंत्री नित्यानंद स्वामी ने 'उत्तरांचल साहित्य अकादमी' की स्थापना की घोषणा की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अकादमी के माध्यम से प्रदेश में साहित्य से जुड़े लोगों को बढ़ावा दिया जाएगा। प्रदेश में लोक साहित्य को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार हर सम्भव उपाय करेगी।

मुख्यमंत्री राजधानी देहरादून की इंदिरा नगर कालोनी पहुँचे। जहाँ शिवानीजी अपनी बेटी के घर पर ठहरी हुई थीं। मुख्यमंत्री ने इस साहित्य मनीषिनी के चरण-स्पर्श कर उनका अभिवादन किया और आशीर्वाद लिया। भावुक माहौल में मुख्यमंत्री ने उन्हें सम्मान स्वरूप गंगाजली भेंट की और शाल ओढ़ाकर उनको सम्मानित किया। शिवानी के दामाद डॉ० वी०के० जोशी और उनकी पत्नी ने मुख्यमंत्री का उनके घर पहुँचने पर स्वागत किया। शिवानी ने स्वामी को अनेक साहित्यकारों द्वारा हस्ताक्षरित माँग पत्र भी भेंट किया, जिसमें उनसे 'उत्तरांचल साहित्य अकादमी' बनाए जाने की माँग की गई। मुख्यमंत्री द्वारा एक साहित्यकार को उनकी बेटी के घर जाकर उनका अभिवादन कर उन्हें सम्मानित करने की पहल सराहनीय है।

शिवानीजी ने मुख्यमंत्री का आभार जताते हुए कहा कि यह सम्मान उनका ही नहीं पूरे साहित्य जगत का सम्मान है। प्रदेश में अकादमी के माध्यम से साहित्य-सृजन को बढ़ावा मिलेगा।

शिवानीजी ने कहा कि अकादमी को पुरस्कार बाँटने के बजाए यहाँ के साहित्यकारों को बढ़ावा देकर उत्तरांचल को साहित्य के क्षेत्र में स्थान दिलाना होगा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की दुर्दशा का कारण यह है कि संस्थान केवल पुरस्कार बाँटने में ही जुट गया है। अच्छा साहित्य आम आदमी तक पहुँचे यह प्रयास होना चाहिए।

पं० सोहनलाल द्विवेदी बाल साहित्य पुरस्कार

बाल साहित्य के क्षेत्र में राजस्थान का सबसे बड़ा पुरस्कार 'पं० सोहनलाल द्विवेदी बाल साहित्य पुरस्कार-2000' लाड़नू के **डॉ० आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'** को उनकी पुस्तक 'अनूठा न्याय' के लिए चित्तौड़गढ़ में 7 अक्टूबर, 2001 को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय साहित्य व सम्मान समारोह में प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार स्वरूप सात हजार रुपये नगद, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह व अन्य भेंट सामग्री प्रदान की जायगी।

उत्तर प्रदेश सरकार पत्रकारिता सम्बन्धी कई पुरस्कार प्रतिवर्ष देगी

उत्तर प्रदेश सरकार ने पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले पत्रकारों, सूचना अधिकारियों एवं समाचार पत्रों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित करने का निर्णय लिया है। पत्रकारिता के क्षेत्र में उच्चस्थ मापदण्ड स्थापित करने एवं विशिष्ट योगदान देने वाले संपादक को गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। इस पुरस्कार के तहत 25 हजार रुपये की नगद धनराशि, विद्यार्थी जी की प्रतिमा एवं प्रशस्ति पत्र दिया जायेगा। इसी तरह सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में सर्वोत्तम फीचर लेखन के लिए भारतेन्दु पुरस्कार सर्वोत्कृष्ट व्यंग लेखन के लिए हरिशंकर परसाई पुरस्कार, सर्वोत्कृष्ट कार्टूनिस्ट को इरफान पुरस्कार तथा सर्वोत्कृष्ट फोटो पत्रकारिता के लिए संजीव प्रेमी पुरस्कार तथा सर्वोत्कृष्ट समाचार लेखन के लिए चयनित सूचना अधिकारी को प्रियदर्शी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। इन सभी पुरस्कारों के अंतर्गत प्रत्येक को 11 हजार रुपये की नगद धनराशि तथा प्रशस्तिपत्र दिया जाएगा। यह सभी पुरस्कार वार्षिक होंगे। इनका वितरण प्रतिवर्ष मई दिवस पर होगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का वार्षिक अधिवेशन 2 जून, 2001 को देहरादून में सम्पन्न हुआ।

दो दिवसीय अधिवेशन में साहित्यकारों ने विभिन्न सत्रों में आज की ज्वलंत भाषिक समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। 2 जून को सायंकाल कवि गोष्ठी और 3 जून को 'अनुभव' संस्था द्वारा बादल सरकार के नाटक 'अंत नहीं' का मंचन किया गया।

समापन सत्र में उत्तरांचल के मुख्यमंत्री श्री नित्यानंद स्वामी ने हिन्दी के प्रमुख 14 साहित्यकारों को हिन्दी साहित्य सम्मेलन की मानद उपाधियाँ वितरित कीं, जिनमें श्री रामदरश मिश्र (नई दिल्ली) को साहित्य वाचस्पति, सुप्रसिद्ध गीतकार डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र को साहित्य सारस्वत, डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी को विद्या वाचस्पति, डॉ० वेदप्रताप वैदिक को साहित्य महोपाध्याय उपाधि देकर सम्मानित किया गया। सभी सम्मानित साहित्यकारों को प्रशस्ति पत्र, श्रीफल एवं अंगवस्त्रम् भेंट किया गया।

सेविवर्गीय प्रबंध एवं औद्योगिक संबंध

डॉ० जगदीश सरन माथुर
रीडर, वाणिज्य संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

'सेविवर्गीय प्रबंध एवं औद्योगिक संबंध' भारतीय विश्वविद्यालयों के बी०काम० तथा एम०काम० पाठ्यक्रम को दृष्टिगत कर नवीनतम सामग्री के साथ प्रस्तुत की गई है। सेविवर्गीय प्रबंध एवं औद्योगिक संबंध अथवा मानव संसाधन प्रबंध में विशिष्टता प्राप्त कर रहे या डिप्लोमा कर रहे विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। विषय को सुबोध बनाने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। विषय को सुबोध बनाने की दृष्टि से विद्वानों के उद्धरण हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी दिये गये हैं। पुस्तक की भाषा सरल, स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। पुस्तक के अन्त में लघु तथा विस्तृत उत्तर वाले प्रश्न भी दिये गये हैं। पुस्तक में लेखक के विगत 25 वर्षों के अध्यापन का अनुभव संचित है।

पुस्तक में सम्मिलित अध्याय

1. सेविवर्गीय प्रबंध—परिभाषा, उद्देश्य एवं महत्त्व, 2. सेविवर्गीय प्रबंध—क्षेत्र, सिद्धान्त, दर्शन व अन्य पहलू, 3. सेविवर्गीय प्रबंध के कार्य, उत्तरदायित्व एवं योग्यताएँ, 4. सेविवर्गीय नीतियाँ एवं पद्धतियाँ, 5. संगठन का परिचय, 6. संगठन-रचना, 7. जनशक्ति नियोजन, 8. कार्य-विश्लेषण, कार्य-विवरण एवं कार्य-विशिष्टता, 9. भर्ती, चयन एवं नियुक्ति, 10. प्रशिक्षण, 11. पदोन्नति, पदावनति, स्थानान्तरण, अवकाश ग्रहण तथा अन्य समान पहलू, 12. अधिशासी विकास कार्यक्रम, 13. निष्पादन मूल्यांकन, 14. कार्य मूल्यांकन, 15. मजदूरी एवं वेतन प्रशासन, 16. मजदूरी भुगतान की रीतियाँ तथा प्रेरणात्मक मजदूरी योजनाएँ, 17. लाभ भागिता एवं सहभागिता, 18. अनुषंगी लाभ, 19. मानवीय सम्बन्ध, 20. अभिप्रेरण, 21. सम्प्रेषण, 22. सेविवर्गीय पर्यवेक्षण, 23. नेतृत्व, 24. कार्य संतुष्टि, 25. कर्मचारी मनोबल, 26. अनुशासन, 27. सेविवर्गीय अभिलेख तथा उसका अनुरक्षण, 28. अंकेक्षण एवं शोध, 29. औद्योगिक संबंध एवं औद्योगिक संघर्ष, 30. परिवेदना, 31. सामूहिक सौदेबाजी तथा 32. प्रबंध में श्रमिकों की भागीदारी

एक सौ साठ रुपये

प्रो. कल्याणमल लोढ़ा की विशिष्ट कृतियाँ

वाक्सिद्धि

कल्याणमल लोढ़ा

कलकत्ता विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० कल्याणमल लोढ़ा समीक्षकों की उस श्रेणी में आते हैं जो किसी विषय पर अपनी लेखनी उठाने से पूर्व तत् सम्बद्ध सामग्री का विशद अध्ययन करते हैं। इसके पश्चात् ही वे अपनी तलस्पर्शी समीक्षा प्रस्तुत करते हैं। प्राय: देखा गया है कि नई पीढ़ी के हिन्दी समीक्षक आधुनिक कविता, कहानी, उपन्यास आदि के मूल्यांकन में तो सहज ही प्रवृत्त हो जाते हैं किन्तु हिन्दी के आधुनिक काल के भारतेन्दुयुग तथा द्विवेदी युग जैसे महत्त्वपूर्ण सोपानों के बारे में सार्थक विवेचना प्रस्तुत करना उनके लिए कष्टसाध्य हो जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ प्रो० लोढ़ा के कुछ ऐसे उत्कृष्ट शोधपरक निबन्धों का संग्रह है जिनमें उन्होंने कुछ ऐसे व्यक्तियों और विषयों को अपनी समीक्षा का विषय बनाया है, साधारणतया जिनकी ओर न तो आज के प्राध्यापकों का ध्यान जाता है और प्राय: जिन्हें अतीत की वस्तु मानकर अवहेलना का पत्र समझ लिया जाता है।

उत्तर भारतेन्दु काल में जिन साहित्यकारों ने निबन्ध लेखन तथा पत्रकारिता के द्वारा न केवल हिन्दी गद्य को ही समृद्ध किया अपितु समसामयिक विषयों पर अपनी बेबाक टिप्पणियों के द्वारा पाठक समाज को प्रबोधित तथा सावधान किया उनमें वर्षों तक भारतमित्र के सम्पादक रहे बाबू बालमुकुन्द गुप्त का नाम अग्रगण्य है। गुप्तजी के अवदान को विस्तारपूर्वक विश्लेषित कर प्रो० लोढ़ा ने शीर्षक की पंक्ति 'विस्मर्यतां किमिव बालमुकुन्द गुप्त:' को सचमुच सार्थक किया है।

इस संग्रह का 'हिन्दी की सार्वदेशिकता' शीर्षक निबंध इस तथ्य की पुष्टि करता है कि भारत के विभिन्न प्रान्तों तथा तत्रस्थ भाषाओं के लेखकों और साहित्यकारों ने हिन्दी की सार्वदेशिकता को उन्मुक्त भाव से स्वीकार किया था। तभी तो राममोहन राय केशवचन्द्र सेन आदि बंग प्रान्त के सुधारकों ने हिन्दी को भारतीय जनसमाज की विचाराभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम स्वीकार किया। लगभग यही स्थिति अन्य प्रान्तों की रही। कथित द्रविड़ भाषा-भाषी प्रान्तों ने भी इस सच्चाई को स्वीकार किया था। सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य को क्या नई पीढ़ी भूल नही गई है ? सुभद्राजी की प्रसिद्ध कृति झाँसी की रानी की विवेचना के क्रम में प्रो० लोढ़ा ने गाथा गीत की शैली का पाश्चात्य एवं पौरस्त्य साहित्य शास्त्र के आधार पर जैसा सुगूढ़ विवेचन किया है वह उनके मौलिक चिन्तन तथा विशद अध्ययन का परिचायक है। हिन्दी काव्य में राधा और कर्ण जैसे निबन्ध जहाँ लेखक के सारग्राही विवेचन के साक्षी हैं वहाँ उनसे इस तथ्य की भी पुष्टि होती है कि एक ही वस्तु को देखने के नज़रिये भिन्न-भिन्न होते हैं। इसी शैली पर हिन्दी काव्य में अभिव्यक्त अनेक पौराणिक तथा ऐतिहासिक पात्रों की भी समीक्षा की जा सकती है। बालमुकुन्द गुप्त शीर्षक निबन्ध का प्रथम वाक्य थोड़ा असमंजस पैदा करता है जिसमें किसी पं० देवकीनन्दन का उल्लेख है। क्या ये प्रसिद्ध उपन्यासकार तथा चन्द्रकान्ता के रचयिता देवकीनन्दन खत्री हैं, किन्तु खत्रीजी ने कोई नाटक नहीं लिखा जैसा पं० मदनमोहन मालवीय के हवाले से यहाँ लिखा गया है। खत्रीजी तो कंगाल भी नहीं थे और न उन्हें 'पं० देवकीनन्दन' कह कर अभिहित किया गया। यह प्रसंग स्पष्टीकरण की अपेक्षा रखता है।

रु. 160 **—डॉ० भवानीलाल भारतीय**

सेवानिवृत्त प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
दयानन्द शोधपीठ पंजाब विश्वविद्यालय

वाग्विभव

कल्याणमल लोढ़ा

धर्म और अध्यात्म में आई आर्य परम्परा की व्याख्या 'वाग्विभव' ग्रन्थ का वैशिष्ट्य है। इस धार्मिक-पौराणिक-आध्यात्मिक दृष्टि का विनिश्चयन, पवित्र माने जाने वाले धार्मिक ग्रन्थों से होता है। डॉ० कल्याणमल लोढ़ा ने दीर्घकाल तक इस विषय पर चिंतन-मनन किया है और वह इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि भारतीय, विशेषकर हिन्दू धर्म-ग्रन्थ, वेद-उपनिषद-पुराण, स्मृतियों और धर्मशास्त्रों में जो पारिभाषिक तत्त्वज्ञान है वह प्रामाणिक है। वह इस तत्त्वज्ञान की समीक्षा में रुचि नहीं रखते क्योंकि अपनी परम्परा की समीक्षा या मीमांसा प्रस्तुत करने के लिए डॉ० लोढ़ा को आधुनिक आलोचनात्मक-बौद्धिक-ऐतिहासिक-समाजशास्त्रीय दृष्टि और विश्लेषण पद्धति अपनानी पड़ती है और उससे धार्मिक आध्यात्मिक परम्परा पर प्रश्न चिन्ह लगते—स्वयं ज्ञान के स्वरूप पर भी क्योंकि जिसे 'ज्ञान' कहा जाता है, उसे ज्ञान के समाजशास्त्र में कार्ल मैनहायम तथा अन्य समाजशास्त्रियों ने 'दिव्य' या अलौकिक या 'ईश्वरादिष्ट' (रिवील्ड) न मान कर उसका विकास, सामाजिक विकास के प्रकाश में रख कर सोचा है।

डॉ० लोढ़ा के 'वाग्विभव' में नास्तिकों, आस्तिकों के विराट् वाक्-वैभव की मीमांसा नहीं की गई है किन्तु कई स्थानों पर भारतीय अधिदर्शन के समर्थन में आधुनिक विज्ञान की साक्षी दी गई है।

डॉ० कल्याणमल लोढ़ा अपनी पुस्तक 'वाग्विभव' में परम्परा में आस्था रखकर, कर्मतत्त्व, पुनर्जन्म, मोक्षतत्त्व, प्राणतत्त्व, श्रद्धा तत्त्व, कामतत्त्व और नीतितत्त्व की व्याख्या पवित्र धर्म ग्रन्थों को प्रामाणिक मानकर करते हैं। इसके लिए वे उक्त तत्त्वों के पारम्परिक विवेचन में, मनुष्य के आधुनिक युग में मूल्यों के ह्रास पर चिन्ता प्रकट करते हुए परम्परागत आध्यात्मिक साहित्य में से मानवीय महत्ता, उत्कृष्टता के बिन्दुओं और उदाहरणों को चुनते हैं जिनसे मनुष्य के इस नैतिक पतन के युग में मनुष्य को मानवीय उच्चता की प्रेरणा मिल सकती है।

धर्म और अध्यात्म चाहे बौद्धिक-वैज्ञानिक दृष्टि से असिद्ध या विवादास्पद हों, शंकाओं से भरे हुए हों, पर इसमें संदेह नहीं कि धर्म-अध्यात्म-उपनिषदों-पुराणों और धर्मशास्त्रों में मानवीय गरिमा के परिवर्धक प्रेरक और उच्चादर्शों के अनेक प्रसंग और वचन हैं।

डॉ० लोढ़ा ने घोर परिश्रम कर ऐसे प्रेरक वचनों, उद्धरणों का संग्रह किया है। यह वर्षों के परम्परा-अध्ययन का परिणाम है। डॉ० लोढ़ा की चिन्ता वस्तुत: सांस्कृतिक और मानवीय है, यह कि इस उपभोक्तावादी समकालीन स्थितियों के आखेट, मनुष्य का नैतिक अभ्युदय कैसे हो।

पुरानी कबीलाई-सामंती व्यवस्था के मानव समाज, धर्मानुशासित थे अत: मनुष्य ईश्वर, धर्म, स्वर्ग-नरक आदि से भय खाते थे, कर्म फल की धारणा से बुरे कर्मों से बचते थे किन्तु आधुनिक युग में, भौतिक विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र आदि ने धर्म और ईश्वर जैसी आस्थाओं पर प्रश्न चिन्ह लगा दिए, फलत: बौद्धिक उन्नति और भौतिक-तकनीकी तरक्कियाँ तो हुईं, जीवन स्तर ऊँचा हुआ, सुविधाएँ मिलीं, किन्तु मूल्यों का आधार व्यक्ति को मान लिया गया, धर्म भावना और ईश्वरादि पारमार्थिक विश्वासों को अयुक्त सिद्ध कर दिया गया और जब व्यक्ति स्वयं ही मूल्य या धर्म का निर्णायक हो गया, निकष बन गया तो यह तय है कि व्यक्ति धर्मानुशासन और उच्चदर्शों से प्रेरणा न लेकर अपनी कामनाओं के भोग में तत्पर हो गया। यह जो मूल्य संकट बढ़ा, उससे सावधान करने के लिए 'पश्चिम का पतन'—'डिक्लाइन ऑफ द वेस्ट', जैसी पुस्तकें लिखी गईं।

पुराने धर्म समाजों में व्यक्तिवादी आधुनिकता की भोगी जीवन पद्धति का प्रभाव बढ़ने पर परम्परावादियों में उग्र प्रतिक्रिया हुई जैसे ईरान में मुल्ला राज्य कायम हुआ और पुराने धर्मानुशासन को धार्मिक क्रान्ति द्वारा स्थापित किया गया। पाकिस्तान-अफगानिस्तान आदि में पुनरुत्थानी-धार्मिक तत्त्ववादी प्रवृत्तियाँ बढ़ीं। इसकी प्रतिक्रिया हिन्दुस्तान में कट्टरपंथ के रूप में हुई जो जारी है और जो इस टकराहट से जिहाद और शुद्धि (कृण्वन्तो विश्वमार्यम्) का मजहबी धर्म युद्ध छिड़ा वह आधुनिकीकरण, बौद्धिकीकरण की जगह मध्यकालीनीकरण करने लगा।

यह प्रशंसनीय है कि डॉ० कल्याणमल लोढ़ा, कट्टर हिन्दुत्वादी नहीं हैं। वे जानते हैं कि लोगों का मन

अभी भी धर्म और परम्परा के विश्वास से ओत-प्रोत है। अत: वे पम्परा में जो मानवीयता के प्रत्यय हैं, उनका संकलन कर, चाहते हैं कि लोग उनसे प्रेरित होकर श्रेष्ठ मनुष्य बनें और भोगवादी आधुनिक संस्कृति से बचें। डॉ० लोढ़ा, मनुष्य में निहित जो उत्कृष्ट संस्कार है उन्हें प्रदीप्त करना चाहते हैं और इसके लिए अनुसंधान और विद्वत्ता का उन्होंने एक उच्च मानक और निकष प्रस्तुत किया है। वे मतमतान्तरों के द्वन्द्व से बच कर परम्परा को खंगाल कर उससे मानवीय वचनों का सावधानीपूर्वक संग्रह करते हैं और परम्परा में श्रद्धा और विश्वास रखते हुए पथ-भ्रष्ट मनुष्य समाज को आदर्शनिष्ठ बनाना चाहते हैं। वे कहते हैं—'भारतीय संस्कृति में जिन तत्त्वों का विवेचन हुआ है, वे मानव जीवन की मूलभूत उत्कृष्टता के आधार तत्त्व हैं। आचारो प्रथमो धर्म: मानकर विचार की उच्चता और व्यवहार की श्रेष्ठता के साथ-साथ सर्वलोकहित की मान्यता से व्यष्टि और समष्टि के तादात्म्य का वैशिष्ट्य निर्धारित किया गया है।'

इस शुभ संकल्प की सिद्धि के लिए प्रो० लोढ़ा ने वैदिक परम्परा का ही नहीं, आगम परम्परा (द्वितीय परम्परा) या अवैदिक परम्परा के ग्रन्थों का भी गंभीर अवगाहन कर अमृत वचन खोज निकाले हैं और उनका जम कर अपने विवेचन में पुन: पुन: विनियोग किया है।

कोई कह सकता है कि उद्धरणबहुल इस लेखन से विवेचन के स्वतंत्र स्वरूप को हानि पहुँची है, वस्तुगतता और वैज्ञानिकता को भी; किन्तु लेखक के दृष्टिकोण को समझना चाहिए। लेखक भारतीय परम्परा में श्रद्धा और विश्वास रखता है और वह अपनी परम्परा के शुभ पक्षों को बारम्बार रेखांकित करता है जिसका उद्देश्य, आधुनिक मानव की लुप्तात्मा का पुनरुद्धार है। उदाहरण के लिए लेखक मानवीय समता के समर्थन में वेद को उद्धृत करता है—'समानी य आकृति: समाना हृदयानि च समानमस्तु यो मनो यथा व सुसहासतिं समानी प्रज्ञा सह वोऽन्नभाग: । समाने मोक्त्रे सहं वो... ।' (अथर्ववेद)

लेखक का मत है कि कर्म, पुनर्जन्म, मोक्ष, प्राण, तप, श्रद्धा, नीति और काम तत्त्वों का सामान्य विवेचन सभी धर्मों में समान है। ये ही वे तत्त्व हैं जिनसे मानवीय आचार-विचार, व्यवहार और संस्कार से जीवन पवित्र, उत्कृष्ट और आदर्श हो सकता है। सभी धर्मों में भले ही उक्त तत्त्वों पर सहमति न हो पर यह तो मानना ही होगा कि धर्मों में मानवीयता की चिन्ता सर्वत्र है और इसी पर लेखक बल देता है कि यदि धर्मों में मनुष्य के हित के लिए उच्चादर्शों को ध्येय माना गया है तो उच्चताओं का संग्रह और उनकी ओर ध्यानाकर्षण वांछनीय है।

लेखक कर्मवाद पर लिखते हुए कहते हैं कि कर्मवाद प्रतिष्ठित विज्ञान है। कर्मवाद चाहे विज्ञान न हो पर वह सत्कर्मैकं पर बल देता है, इसमें संदेह नहीं। लेखक यत्र-तत्र पारम्परिक धारणाओं के समर्थन में वैज्ञानिकों को उद्धृत करते हैं। पुनर्जन्म और परकाया प्रवेश पर लेखक ने परामनोविज्ञान के 'साइंस एण्ड साइकिक फिनोमिनन' को उद्धृत किया है। अन्य अनेक ग्रन्थों को भी। कर्मतत्त्व, पुनर्जन्म, मोक्ष, प्राण, भक्तितत्त्व, श्रद्धातत्त्व, कर्मतत्त्व और नीतितत्त्व पर लेखक का 'वाग्विभव' इतना समृद्ध और भरापूरा है कि यह पुस्तक भारतीय संस्कृति का एक आदर्श (मॉडल) बन गई है और यह किताब मानवीयता की आचारसंहिता भी कही जा सकती है।

'वाग्विभव' एक सुगठित रचना है। भारतीय मूल्य-मानवीयता की शिक्षा के लिए यह एक अपरिहार्य ग्रन्थ है। 'वाग्विभव' जैसी पुस्तक का यदि अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो सके तो जो विदेशों में भारतीय दर्शन और धर्म के प्रति जो रुचि और जिज्ञासा बढ़ रही है, उसे शांत और संतुष्ट करने के लिए यह कृति उपयोगी होगी, विशेषकर अनिवासी भारतीय इस पुस्तक को पढ़कर अपनी भारतीय संस्कृति की प्यास बुझा सकते हैं।

रु. 200 **—विश्वम्भरनाथ उपाध्याय**

वाग्दोह

कल्याणमल लोढ़ा

भारतीयता और उसके नैरंतर्य में निहित सांस्कृतिक तथ्यपरकता की परख करने की कोशिश करने वाले विद्वान चिंतकों में प्रोफेसर कल्याणमल लोढ़ा का प्रमुख स्थान है। उनकी पुस्तक 'वाग्दोह' हाल ही में सामने आयी है, जिसमें सांस्कृतिक विमर्श की नवीन कोशिशें शामिल हैं। इसमें आठ निबन्ध संकलित हैं।

पुस्तक में प्रथम निबन्ध 'संस्कृत और संस्कृति' विषय पर है। इस निबन्ध में उन्होंने संस्कृत को विश्व विद्या की संस्कृति बताया है। संस्कृति को वे किसी भी राष्ट्र का मस्तिष्क और मूल्यों व विचारों का अक्षय कोष मानते हैं। अपनी इन स्थापनाओं के लिए लोढ़ा जी समानधर्मी चिंतकों के कथन साक्ष्य उपस्थित करते हैं और प्राचीन ग्रन्थों के श्लोक तथ्यों से भी इन्हें प्रमाणित करते हैं। इसी निबन्ध में वे संस्कृति के उन्नयन के लिए शिक्षा के महत्त्व को भी निरूपित करते हैं। इसके लिए प्राचीनकाल के सद्प्रयासों के उदाहरण भी वे उपस्थित करते हैं।

दूसरे निबन्ध 'ध्यानस्तु ते भारत भूमि भागे' में भारतीय संस्कृति की राष्ट्रीय अस्मिता और उसकी अवधारणाओं का विवेचन है। उनकी स्थापना है कि भूगोल, इतिहास, परम्परा और काल के सतत व अक्षुण्ण प्रवाह में राष्ट्र अपनी संस्कृति और सभ्यता को मूल्यवान बनाता है। राष्ट्र का इतिहास दिक्मान का कालमनि है। भूगोल उसकी परिधि बनाता है, इतिहास विस्तार देता है। किसी राष्ट्र की संस्कृति का इतिहास यांत्रिक नहीं होता - वह तो उसकी परिपक्व परिणति है। लोढ़ा जी यह भी बताते हैं कि दिक् और काल की सीमाएँ बनती-टूटती रहती हैं, पर संस्कृति की व्याप्ति और मर्यादा विच्छिन्न नहीं होती।

तीसरे निबन्ध 'काल' में काल तत्त्व पर प्राचीन खोजों और विमर्श प्रसंगों की विस्तृत चर्चा है। ऋषियों और मनीषियों ने काल-महाकाल की अन्यतम विवेचना की है। प्राचीन खगोलविदों के अनुसंधान आज भी विज्ञान को प्रभावित कर रहे हैं। लोढ़ा जी मानते हैं कि काल ही सृष्टि का कारण है। यह कभी क्लान्त नहीं होता। काल के संबंध में वेद, वेदांत-सूत्र, रामायण, महाभारत, बौद्ध-जैन मत आदि का उल्लेख करते हुए इस निबन्ध को उन्होंने बेहद तथ्यपरक बना दिया है। उनकी स्थापना है कि जीवन प्रवाह का सातत्य, उसकी सांकेतिकता, उसकी प्रतीकत्व सभी कालाश्रित हैं।

चौथे निबंध 'प्राचीन भारत का विद्यादर्श' में विद्याध्ययन और उसके महत्त्व निरूपण की परम्परा का उल्लेख करते हुए कई जरूरी जानकारियाँ दी गयी हैं। लोढ़ा जी कहते हैं—भारतीय विचारधारा के अनुसार विद्या ब्रह्म-ज्ञान स्वरूपा है। वह गुरु की भी गुरु है। प्राचीन विद्या का आदर्श था अलौकिक, आध्यात्मिक और मंगलपरक सौंदर्यात्मक गुणों का मूर्त रूप, व्यक्ति की प्रवीणता और पूर्णता के साथ संस्कृति के उदात्त मूल्यों और घटकों की उपलब्धि। छठे निबन्ध 'अर्थ तत्व' में मनुष्य द्वारा धनार्जन और अर्थ से रिश्ता रखने की उत्कंठा का परीक्षण किया गया है।

अन्तिम निबन्ध में 'सोमतत्व' की चर्चा है। इसमें सोम को अमृत, देवता आदि बताया गया है। सुश्रुत का उदाहरण देकर लोढ़ा जी ने 25 प्रकार के सोम और उनके सेवन की विधियाँ भी बतायी हैं। इस निबन्ध से पता चलता है कि सोम समस्त वनस्पतियों में व्याप्त है।

लोढ़ा जी के विशद् चिंतन और ज्ञानपरक इन निबन्धों के माध्यम से भारतीयता और उसमें विद्यमान ग्रहणीय तथ्यपरकता पाठकों के समक्ष उपस्थित होती है। 'वाग्दोह' इन्हीं अर्थों में एक महत्वपूर्ण कृति है।

रु. 200 **—प्रदीप तिवारी**

इतिहास-दर्शन

डॉ० झारखण्डे चौबे
प्रोफेसर, इतिहास विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

इतिहास-दर्शन आज इतिहास के छात्रों के लिए अनिवार्य विषय है। इतिहास को सही परिदृश्य में देखने और समझने के लिए इतिहास के दर्शन का बोध होना आवश्यक है। डॉ० चौबे ने विगत 35 वर्षों के अध्यापन अनुभव के आधार पर इतिहास-दर्शन की रचना की। विगत दस वर्षों से यह ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय है। इसके अनेक संस्करण हो चुके हैं।

डॉ० चौबे ने पुस्तक में नई सामग्री सम्मिलित करते हुए पुस्तक को पूर्णतया संशोधित तथा परिवर्तित किया है।

पृष्ठ संख्या 400 मूल्य : 140

पांचाली

(द्रौपदी के जीवन पर एक और उपन्यास)

बच्चन सिंह 125.00

वयोवृद्ध आलोचक बच्चन सिंह द्वारा लिखित उपन्यास 'पांचाली' अभी-अभी सामने आया है। यह द्रौपदी के जीवन पर लिखा गया आत्मकथात्मक उपन्यास है। हालांकि बकौल काशीनाथ सिंह द्रौपदी इस उपन्यास में 'कथावाचिका' के रूप में उपस्थित हैं, जो महाभारत की दीर्घगाथा बाँचती हैं। उपन्यास में द्रौपदी 'स्वगत गाथा' के साथ उपस्थित हैं। बच्चन सिंह ने अपने मुख्यपात्र के मन:संसार के उन संवेगपूर्ण स्थिर चित्रों को एक विस्तृत कोलाज में बदला है जिसमें वैचारिकता का जोर है और घटनाबहुलता भी। स्वयं द्रौपदी का कथन इस बात को और अधिक स्पष्ट कर देता है। 'स्वागत' नामक अध्याय में वह कहती हैं—'माना कि व्यास का महाभारत, सम्पूर्ण सत्य है, जीवन का निचोड़ है, सार है। पर मेरे अंतरंग की बहुत-सी बातें छूट गयी हैं। मेरी इस कथा में रेखाएँ व्यास की हैं, रंग मेरा है।'

23 लघु अध्यायों में विभाजित इस उपन्यास में बच्चन सिंह ने भरसक यह कोशिश की है कि द्रौपदी के चरित्र का विकास उसके व्यक्तित्व उसके व्यक्तित्व के रंग में ही हो। प्रथम अध्याय 'स्वयंवर' से ही युवा द्रौपदी अपने सौंदर्य सजग व्यक्तित्व के साथ सामने आती है और पूरी कथा में उसकी सौंदर्य सजगता निरन्तर उपस्थित रहती है। हालांकि यज्ञ से युवावस्था में ही उत्पन्न द्रौपदी के युवा काल से पूर्व का जीवन कहीं दीखता नहीं, मगर उपन्यासकार ने अगर कोशिश की होती तो अपनी काल्पनिकता के उपयोग से वह इस बात का चित्रण कर सकता था। उपन्यास के अन्तिम अध्याय के एक द्वंद्व प्रसंग में द्रौपदी को अपनी बालिका छवि का स्मरण होता है। प्रसंग कुछ इस तरह है—'महाप्रस्थान के पहले का दिन। मैंने आदमकद दर्पण को पोंछा। उसके सामने खड़ी हो गयी। उसमें किशोर वय की अजनबी बालिका खड़ी थी। मैंने जोर देकर पूछा—तुम कौन हो?' वह हँसी—'एक बार दर्पण पोंछो तो सम्भव है अपनी छवि देख लो।' एक स्वच्छ कपड़े से पुन: पोंछा। इस बार वार्धक्य की दहलीज पर खड़ा एक दूसरा बिंब दिखायी पड़ा। कोई खिलखिला कर हँस रहा था—'मैं याज्ञसेनी थी तुम द्रौपदी हो।'

पूरे उपन्यास में युवा द्रौपदी निरंतर अपने सौंदर्य के इर्द-गिर्द उपस्थित होती पुरुष लीलाओं का सामना करती है और उसकी अपनी मानसिक लीलाएँ भी बार-बार प्रकट होती रहती हैं। द्रौपदी का चरित्र इस उपन्यास में स्त्री के निजी संघर्ष और पुरुष से राग-वैर के प्रसंगों के बीच कहीं बेहतर, कहीं साधारण ढंग से विकसित हुआ है। पुरुष प्रधान समाज में पाँच पतियों के मध्य विभाजित द्रौपदी अपने जीवन में विरुद्ध मनोदशाओं वाले पुरुषों के बीच सामंजस्य स्थापित करती दिखाई देती है। यह अलग किस्म का विरुद्धों का सामंजस्य है। हालांकि द्रौपदी अर्जुन के प्रति अत्यधिक आसक्त है, मगर युधिष्ठिर के साथ अपने दांपत्य का अधिकांश बिताती है। पाण्डवों में केवल भीम ही है जो इस उपन्यास में द्रौपदी के लिए मर मिटने को तैयार रहते हैं। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन सिर्फ तीन पाण्डवों के मध्य द्रौपदी का दांपत्य विभाजित दिखाई देता है। नकुल, सहदेव के साथ उसके संबंध थे भी कि नहीं इसका कोई दृश्य-चित्र इस पूरे उपन्यास में कहीं दिखाई नहीं देता। द्रौपदी का मन और शरीर सिर्फ तीन पाण्डव-पतियों के लिए ही विभाजित और प्रस्तुत है। पाँच भागों में विभक्त होने की बात केवल संवादों और विश्लेषण प्रसंगों में ही देखने को मिलती है। द्रौपदी कहती है—'अर्जुन को मैं बहुत प्यार करती हूँ।' (पृ० 51) मगर द्रौपदी की यह कामना सदा अतृप्ति की भेंट चढ़ी रहती है क्योंकि 'अर्जुन प्रेम का उपहास करता है और उसकी शाश्वतता का मखौल उड़ाता है।' (पृ० 54) पूरे उपन्यास में द्रौपदी के मन में अर्जुन के प्रति संचित अनुराग प्रकट होता रहता है, मगर अर्जुन द्रौपदी की उपेक्षा करते और उसके साथ अल्प समय बिताते नजर आते हैं। द्रौपदी के यौवन और जीवन रक्षा के रूप में केवल भीम बार-बार सामने आते हैं। युधिष्ठिर के नीति वचनों से द्रौपदी को बोरियत होती है। इसका कारण यह है कि सभी कर्मकांडी और नीतिकार पुरुष स्त्रियों के लिए बंधनों के नए-नए नियम बनाते रहे हैं। युधिष्ठिर भी उन नीतिकारों से अलग नहीं है। जुआ स्थल पर द्रौपदी को भी दाँव पर लगा देने और हार जाने के बाद उन्हें द्रौपदी को अपमान से मुक्त कराने हेतु कोई नीतिवचन नहीं याद आता। सभी विपत्तियों में युधिष्ठिर की भूमिका लिजलिजे उपदेशक की साबित होती है। इसीलिए द्रौपदी कहती है—'जिस स्त्री का पति राजा युधिष्ठिर हो वह दु:खी न होगी तो क्या होगी?' (पृ० 75)

पूरे उपन्यास में द्रौपदी का मन स्त्री जीवन की सार्थकता की तलाश भी करता रहता है। स्त्री की सार्थकता का एक पक्ष पुरुष की रक्षा करने और उसे मुक्त करने का भी होता है। इसीलिए चीर हरण प्रसंग में जब द्रौपदी से धृतराष्ट्र वरदान माँगने को कहते हैं तो वह पांडवों को दासता से मुक्त करने का वरदान माँगती है। इसी तरह जब अर्जुन का पुत्र वभ्रुवाहन यक युद्ध में अंजनि में पिता अर्जुन को मार डालता है तो उलूपी उपस्थित होती है और एक दिव्य मणि से अर्जुन पुनर्जीवित हो जाते हैं। पुरुष की रक्षा के लिए स्त्री की इस पहल को द्रौपदी महत्त्वपूर्ण मानती है। वह कहती है—'बार-बार ठोकर खाने पर ही पुरुषों की अवधारणाएँ बदलेंगी' (पृ० 123)

उपन्यास में पाठकों के सामने कृष्ण के प्रति द्रौपदी का सखा भाव अन्तिम अध्याय में ही खुलता है। वह कहती है—'मैं डंके की चोट पर कहना चाहती हूँ कि मैं कृष्ण को प्रेम करती थी, जैसे मछलियाँ पानी को करती हैं।' (पृ० 134) अपने इस कथन के पूर्व द्रौपदी व्यास का स्मरण कर उन्हें कोसती भी हैं कि उन्होंने इस बात को भाषा क्रीड़ा में ढँक दिया। मगर द्रौपदी स्वयं अपने इस कथन में कृष्ण से अपने प्रेम को एक आध्यात्मिक प्रतीक में ढँक देती है। मछलियों का पानी से प्रेम केवल सखाभाव नहीं है, जीवन राग भी है। द्रौपदी से कृष्ण का प्रेम इस जीवन-राग की व्याख्या से अलग किस्म की व्याख्या की माँग करता है। इसलिए इसकी अलग आध्यात्मिक ऊँचाई होगी। बच्चन जी ने भी एकाध भाषा-क्रीड़ाओं के अलावा इस प्रसंग को विकसित करने की दिशा में पहल नहीं की है। उपन्यासकार ने द्रौपदी के मन: संसार के बहाने महाभारत के उन प्रसंगों को पुन: स्मरण कराया है, जिनका द्रौपदी के जीवन से गहरा संबंध रहा है। मगर इन बहुचर्चित और बहुप्रस्तुत प्रसंगों के सहारे हम द्रौपदी के जीवन के सभी मौलिक पक्षों को नहीं जान पाते। स्त्री-मन के सभी कोनों तक पहुँच पाने के लिए उपन्यासकार को अपने मन में संशोधन करना पड़ता। बच्चन जी ने अपने को इससे लगातार बचाया है। उनकी द्रौपदी कहती भी है—'स्त्री के बारे में पुरुष की बात उतनी प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती।' (पृ० 117) स्वयं बच्चन सिंह पर यह बात इस उपन्यास के कई संदर्भों पर लागू होती है। फिर भी यह उपन्यास द्रौपदी की दृष्टि से महाभारत की वास्तविकता को पुन: जानने का एक नया अवसर देता है। पाठक, पात्रों, चरित्रों और घटनाक्रमों की लोकाश्रित परम्परा से भी परिचित होता चलता है। भारतीय उपन्यासों की कड़ी में इसका उल्लेख अवश्य होगा। **—प्रदीप तिवारी**

जितना पढ़ सका हूँ, वह बच्चन सिंहजी के कृतित्व के अनुरूप है। सबसे बड़ी बात कि हजारीप्रसाद द्विवेदी की परम्परा में एक मनीषी विद्वान् ने पहली बार रचनात्मक विधा में हमें एक कृति दी है।

—श्रीलाल शुक्ला

धनञ्जयविरचितं

दशरूपकम्

धनिक कृत अवलोक टीका तथा हिन्दी व्याख्या सहित

सम्पादक

डॉ० रमाशङ्कर त्रिपाठी

प्रारम्भ में अनुसन्धानात्मक भूमिका, अर्थ, विशेष, पूर्व पक्ष, सिद्धान्त तथा संस्कृत टिप्पणी सहित। संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य के छात्रों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण।

मूल्य : 150.00

समाचार विविधा

विष्णु प्रभाकर का 90वाँ जन्मदिन

वरिष्ठ गाँधीवादी कथाकार विष्णु प्रभाकर का कहना है कि इस तेजी से बदलती दुनियाँ में लेखकों की स्थिति में कोई महत्त्वपूर्ण बदलाव नहीं आया है। हालांकि संघर्ष तो उन्होंने जीवनभर किया है, लेकिन धीरे-धीरे संघर्ष और गहराता जा रहा है। 21 जून को अपने 90वें वर्ष में प्रवेश करते हुए विष्णु प्रभाकर ने कहा कि उन्होंने अपने जीवन में न कभी हार मानी है और न ही मानेंगे।

इस अवसर पर सामयिक प्रकाशन के निदेशक महेश भारद्वाज ने नारी जीवन से सम्बन्धित विष्णु प्रभाकर की कहानियों के संग्रह 'मैं नारी हूँ' (दो खण्डों में) पुस्तक प्रभाकरजी को भेंट की। इस पर भगवान सिंह, पंकज बिष्ट, महेश दर्पण, भगवानदास मोरवाल, निशा निशांत सहित कई लेखकों-साहित्यकारों ने विष्णु प्रभाकर को जन्मदिन की बधाई दी। लम्बे संघर्ष के बाद हासिल किए हुए प्रीतमपुरा स्थिति अपने नए घर में विष्णु प्रभाकर का यह पहला जन्मदिन था।

प्रायोजित साहित्य के कारखाने

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा था कि साहित्य के क्षेत्र में कुछ ऐसे कारखाने खुल गये हैं जो साहित्य की मूल्यवत्ता में हस्तक्षेप करके किसी को बड़ा और किसी को छोटा बनाकर स्वयं को महत्त्वपूर्ण बनाए रखने के लिए भ्रष्ट विचारों का उत्पादन करते हैं।

आचार्य शुक्ल के जमाने से चलकर बीसवीं सदी के अंत तक इन कारखानों का आशातीत विकास हुआ है। एक दौर था जब इलाहाबाद में अभिनंदन प्रथा का चलन हुआ था। काशी से चरित्र हनन की प्रथा का सूत्रपात हुआ था। 'सूर सूर तुलसी शशी' वाली उक्ति प्रसाद और प्रेमचंद को लेकर चरितार्थ की जा रही थी।

इन कुत्सित कारखानों के मालिक वही लोग थे जो साहित्य की रचनात्मक दौड़ में पिछड़ जाने के कारण ईर्ष्याग्रस्त और कुंठित थे या आर्थिक स्रोतों पर काबिज होने के लिए स्वार्थप्रेरित थे।

बीसवीं सदी के अन्तिम दशक से इन कारखानों को अपना चरित्र बदलना पड़ा है। इनके केन्द्र भी बदले हैं। अब यह कारखाने रचना के क्षेत्र में उतर पड़े हैं। इन्होंने अब साहित्यिक माफिया का रूप अख्तियार कर लिया है। हालांकि साहित्य में आज भी पैसा नहीं है पर नैतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक पतन के इस दौर में यदि कोई अभी तक बचा है तो वह लेखक ही है।

प्रायोजित साहित्य के इन कारखानों में उन लेखकों को कापीराइटर के रूप में काम दिया जाता है, जो अपनी रचना के बल पर खड़े रहने का दमखम रखते हैं, पर अपनी आमदनी बढ़ा सकने के लिए वे प्रायोजित रचनाओं का संशोधन और प्रतिलेखन करते हैं।

लोकार्पण समारोहों में पढ़े जाने वाले समीक्षा-लेखों का बाकायदा पेमेंट किया जाता है। ऐसे आयोजनों में हाजिर रहने वाले आलोचकों को उनकी उपस्थिति के लिए 'दान-दक्षिणा' के अलावा टैक्सी आदि का किराया दिया जाता है। कुत्सित रचनाओं को लिखवाने के लिए लेखकों को कमीशन दिया जाता है। फिर माफिया सरगना उस रचना को जाँचते हैं। उसमें संशोधन-संवर्द्धन करते हैं। सटीक बनाते हैं। इन कारखानों में यह सहकारी रचनाकम अब व्यवसाय बन गया है।

—कमलेश्वर

साहित्य में माफिया

साहित्य में भी अब एक माफिया पैदा हो गया है, जिसके कारण अच्छे कथाकारों को उपयुक्त मंच नहीं मिल पा रहा है। पहले के मुकाबले कवि, कथाकार या कहानीकार कमजोर पड़ गए हों, ऐसी बात नहीं है। स्तरीय लेखन अब भी हो रहा है लेकिन साहित्य में एक गिरोह के वर्चस्व के कारण नए कथाकारों को उचित स्थान नहीं मिल पा रहा है। इससे साहित्य का भी नुकसान हो रहा है।

—डॉ० महीप सिंह

डीजीपी के व्यंग्य संग्रह का लोकार्पण

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री ने 21 जुलाई को नयी दिल्ली में हिन्दी के साहित्यकार एवं राज्य पुलिस महानिदेशक महेशचन्द्र द्विवेदी के व्यंग्य संग्रह 'क्लियर फंडा' एवं उनकी पत्नी कथाकार नीरजा द्विवेदी के कहानी संग्रह 'मानस की धुंध' का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि 'क्लियर फंडा' में व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर व्यंग्य लिखे हैं जो पीड़ित मन को प्रकट करते हैं। श्रीमती नीरजा द्विवेदी के कहानी संग्रह 'मानस की धुंध' के विषय में राज्यपाल ने कहा कि उनकी कहानियाँ आदर्श की सम्भावनाओं को रेखांकित करती हैं और उनकी दृष्टि में आदर्श आग्रह को सहज भाव से रेखांकित किया गया है।

मिलकर लिखेंगे इतिहास

भारत और पाकिस्तान के इतिहासकार एवं शिक्षाविद मिलकर भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन से पूर्व का इतिहास लिखेंगे जिससे दोनों देशों के लोगों की गलतफहमियों को दूर करने में मदद मिल सके। पाकिस्तानी इतिहासकार एवं लेखिका हमीदा खुहरो ने बताया कि दोनों देशों के इतिहासकार एवं शिक्षाविद एकजुट होंगे। सूचनाओं का आदान-प्रदान होगा तथा इतिहास की पाठ्य-पुस्तकें लिखी जाएंगी। इससे भारत और पाकिस्तान का तथ्यात्मक इतिहास सामने आएगा। उन्होंने 'इण्डियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च' द्वारा यहाँ आयोजित 'भारत-पाकिस्तान सम्मेलन' के समापन के बाद यह जानकारी दी।

पुस्तक-वार्ता

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली 'पुस्तक-वार्ता' नाम से द्वैमासिक पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है। उद्देश्य है—''अच्छी समीक्षा पाठकों के लिए किताबों के संसार में खिड़की खोलने का काम करती है। वह उन्हें बताती है कि क्या पढ़ना उनके जीवन के लिए जरूरी होगा। उसी तरह समीक्षा पाठकों को यह बताती है कि किस प्रकाशक ने समीक्षित किताब प्रकाशित की है। कई किताबें तो समीक्षा के कारण ही जानी, खरीदी और पढ़ी जाती हैं।''

हिन्दी लेखक, प्रकाशक तथा पाठक के लिए ऐसी पत्रिका की नितान्त आवश्यकता अनुभव की जा रही थी जो तीनों में परस्पर संवाद करा सकें और दिशा निर्देश कर सके।

'पुस्तक-वार्ता' प्रकाशन के लिए संपादक श्री अशोक वाजपेयी तथा सहायक संपादक श्री राकेश श्रीमाल बधाई के पात्र हैं। कुलपति वाजपेयीजी के निर्देशन में विश्वविद्यालय हिन्दी के विकास की दिशा में स्थायी महत्व के कार्य कर रहा है। कुछ वर्षों में इस विश्वविद्यालय के प्रयास फलीभूत होंगे।

स्मृति शेष

मराठी लेखक बसंत पुरुषोत्तम काले का निधन

मराठी के प्रसिद्ध सुप्रसिद्ध लेखक 70 वर्षीय **बसंत पुरुषोत्तम काले** का 27 जून को मुम्बई में निधन हो गया। स्व० काले ने गुलमोहर नामक पुस्तक के लेखन के रूप में देश और विदेश में चर्चित रहे। उन्होंने अपने लेखन में मध्यमवर्गीय परिवारों की विसंगतियों को उजागर करने का प्रयास किया था।

साहित्यकार सुरेन्द्र श्रीवास्तव का निधन

जाने माने साहित्यकार एवं जे०पी० मेहता इण्टर कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य **सुरेन्द्रकुमार श्रीवास्तव** का 1 जुलाई की रात में वाराणसी में निधन हो गया। वह 88 वर्ष के थे। आपका जन्म 10 फरवरी, 1915 को गोरखपुर स्थित इलाहीबाग में हुआ। काशी आपकी कर्मभूमि रही।

वाराणसी के रामकटोरा क्षेत्र निवासी श्री श्रीवास्तव ने एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखीं। उनकी साहित्य सेवा के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 1945 और 1758 में पुरस्कृत किया गया था। उनके प्रमुख काव्य संग्रह मजदूर, जागरण के गीत, अनागता, अर्चना के फूल, मेरी प्रतिनिधि रचनाएँ और सद्भावना हैं। कहानी संग्रह में अंजान रास्ते उनकी प्रमुख रचना रही।

कबीर और भारतीय संत साहित्य

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

एक सौ रुपये

उनका होना आज हमारे लिए बेहद जरूरी है। प्रस्तुत कृति समकालीन भारतीय संतों और चिन्तन-धाराओं के मध्य कबीर को समझने का प्रयत्न है।

मड़ई (वार्षिक)

विश्व बाजार के गली-गली तक पहुँचने तथा विदेशी मीडिया का वर्चस्व बढ़ने से आज हमारी संस्कृति दब रही है या संकुचित हो रही है। हमारी संस्कृति पूरे वर्चस्व के साथ देश में व्याप्त रहे, यही भारतीय जनमानस का कर्त्तव्य है। इसी लक्ष्य को लेकर 'मड़ई' पत्रिका का प्रकाशन किया गया है। 'मड़ई' अपने आप में पूरी शक्ति के साथ भारतीय संस्कृति को व्यक्त करती है। यह सांस्कृतिक चेतना को पूरी तरह से उजागर करने वाला शब्द है।

इस पत्रिका में देश के विभिन्न प्रदेशों की लोक संस्कृति पर बड़ी गहराई से लेख प्रस्तुत किये गये हैं। जिससे देश की लोक संस्कृति को एक सूत्र में बाँधने का बड़ा ही अच्छा प्रयास किया गया है। एक सौ अस्सी पृष्ठ की इस पत्रिका में बयालीस लेख पूरी ठोस सामग्री है। आशा है यह पत्रिका अपने लक्ष्य में पूरी तरह सफलिभूत होगी। यह पत्रिका वार्षिक और नि:शुल्क है। ऐसी उत्तम पत्रिका के सम्पादन-प्रकाशन के लिये सम्पादक डॉ० कालीचरण यादव बधाई के पात्र हैं।

सम्पर्क सूत्र : **डॉ० कालीचरण यादव**
सम्पादक, बनियापारा
जूना विलासपुर, छत्तीसगढ़

सृजन-पथ

देश में विगत चार दशकों से लघु पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्य की जो सेवा की जा रही है, वह हिन्दी पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इन लघु पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी की बहुत बड़ी उपलब्धि का कोई अभी तक लेखा-जोखा नहीं है, पर प्रतिवर्ष इस दिशा में अनेक नयी पत्रिकाएँ प्रकाशित की जा रही हैं। सृजनपथ ऐसी ही साहित्यिक पत्रिका है जिसके दूसरे वर्ष का दूसरा अंक हमारे समक्ष है।

इस अंक में कविता, कहानी, निबन्ध तथा पुस्तक समीक्षा सहित अनेक उत्तम पठनीय सामग्री प्रस्तुत की गयी हैं। इस अंक में मुक्तिबोध और पाण्डेय बेचन शर्मा पर अच्छा पठनीय लेख प्रस्तुत किया गया है। साहित्य सृजन की दिशा में इस पत्रिका का प्रयास प्रशंसनीय है।

सम्पर्क सूत्र : **सृजनपथ**
एन०एच०पी०सी० कालोनी, विद्युत नगर
११/३ सिलीगुडी-734425 (पश्चिम बंगाल)

मेरे मत से हिन्दी पत्र या पत्रिकाओं की समालोचनाएँ उनके जन्मते ही न होनी चाहिए। समालोचना का समय इस तरह होना चाहिए—

दैनिक का	तीन महीने चलने पर
साप्ताहिक का	छ: महीने चलने पर
मासिक का	एक साल चलने पर

—स्व० पं० पद्मसिंह शर्मा

पत्रिकाएँ

सहमत मुक्तनाद (मासिक)
सम्पादक : के०एन० पणिक्कर
सम्पर्क : सहमत, 8 विट्ठलभाई पटेल हाउस
नई दिल्ली-1 (एक प्रति 25/-, वार्षिक 150.00)

विन्यास (मासिक)
सम्पादक : डॉ० बुद्धदेव चटर्जी
सम्पर्क : पारिजत, तवा कालोनी गेट
इटारसी-461111 (प्रति अंक 7.00)

वसुधा (त्रैमासिक)
सम्पादक : कमला प्रसाद
सम्पर्क : एम०-31, निरालानगर, मदमदा रोड
भोपाल-3 (वार्षिक 150.00)

दस्तक (त्रैमासिक)
सम्पादक : राघव आलोक
सम्पर्क : साराजही, मकटमपुर, टाटानगर
जमशेदपुर-831002 (वार्षिक 70.00)

अंतिका (त्रैमासिक)
सम्पादक : अनलकांत
सम्पर्क : अक्षर प्रकाशन, दरियागंज
नयी दिल्ली-2 (वार्षिक 60.00)

संदर्भ (त्रैमासिक)
प्रवेशांक : अप्रैल-जून 2001
सम्पादक : डॉ० रामकुमार तिवारी
सम्पर्क : द्वारा श्री आनन्द
बैरोलिया, चुरू कोठी हाता, मोरा बादी
राँची-834008

लघु पत्रिकाओं का काम है साहित्य में नये रूप, नयी अन्तर्वस्तु, नयी जीवन दृष्टि की पहल। इसमें भरती के पन्ने नहीं होते; बल्कि उसका हर लफ़्ज हर पन्ना इतना कीमती होता है कि कोई चीज बेकार और व्यर्थ नहीं जाती।

केवल लेखक हो जाने और कहीं छप जाने के लिए कुछ लोगों ने लघु पत्रिकाएँ निकाली हैं, कोई बड़ा साहित्यिक उद्देश्य नहीं है उनका।

लघु पत्रिका निकालनते-निकालते लोग प्रकाशकों से मोटे-मोटे उपन्यास, कहानी और कविता संग्रह छपाने वाले बन जाते हैं।

प्रयोगशील और प्रगतिशील आन्दोलन लघु पत्रिकाओं से शुरू हुआ, उसी तरह से साठ के दशक की साठोत्तर जो क्रांतिकारी रचनाएँ हैं जिससे धूमिल पैदा हुए हैं, राजकमल चौधरी पैदा हुए हैं, ये लघु पत्रिकाओं से पैदा हुए हैं। इसलिए जितने नये प्रयोग हुए हैं रूप की दृष्टि से, अन्तर्वस्तु की दृष्टि से लघु पत्रिकाओं में जो पहल, जो शुरुआत हुई, यही उनकी भूमिका है। उसके साथ नहीं भूलना चाहिए कि इस दौर में, केवल साहित्य में नए प्रयोग करने का दायित्व ही नहीं है लघु पत्रिकाओं का, बल्कि अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और कुछेक राजनीतिक दायित्व हैं। **—नामवर सिंह**

बाल साहित्य की *लुभावनी पुस्तकें*

स्कॉलिस्टिक इण्डिया (प्रा०) लिमिटेड, 29 उद्योग विहार गुड़गाँव बाल साहित्य की मनोहारी पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं। 5 वर्ष से 12 वर्ष तक के बच्चों के लिए अत्यन्त रोचक बहुरंगी पुस्तकें बच्चों के भाषा ज्ञान के साथ प्रकृति, पर्यावरण तथा परिवेश का ज्ञान भी कराती हैं। रोचक कहानियाँ बाल मन को कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का सृजन करती हैं।

उल्लेखनीय पुस्तकें—

पानी के फूल	*पोइली सेन गुप्ता*	40.00
पाजी बादल	*गुलजार*	40.00
खजाने का थैला	*देवकी देशमुख*	45.00
बूम्बा चला, गुस्सा ढूँढने	*संतिनी गोविंदन*	45.00
नीना की नानी	*विनीता कृष्णा*	40.00
किस्सा कहानी दाल बिरयानी	*सुभद्रा सेन गुप्त*	70.00

सभी पुस्तकें कथानक तथा विषय के अनुरूप चित्रों से सज्जित हैं। मोटे कागज तथा आर्ट बोर्ड पर मुद्रित ये पुस्तकें प्रत्येक आधुनिक बाल विद्यालयों के पुस्तकालयों के लिए सर्वथा संग्रहणीय तथा बालक-बालिकाओं के लिए प्रेरक हैं।

राग जिज्ञासा

मोक्षमूलक सङ्गीत का आध्यात्मिक विवेचन

देवेन्द्रनाथ शुक्ल

विषय क्रम

1. नादब्रह्म, 2. सा विद्या या विमुक्तये, 3. अतीत के सन्दर्भ, 4. ध्रुवपद, पद एवं ख़याल, 5. राग के विविध पक्ष, 6. वर्तमान सङ्गीतशास्त्र और लोकधुन, 7. लय ताल एवं मात्रा, 8. ताल, वाद्य और ध्वनि, 9. घराना, 10. स्वर, रस एवं राग, 11. वर्तमान और राग नियम, 12. अप्रचलित राग, 13. नवनिर्मित राग, 14. राग, समय और मुद्रित सङ्गीत, 15. चित्र चर्चा, 16. साधकों के अनुभव।

राग-रागिनियों के 32 दुर्लभ श्वेत-श्याम तथा रंगीन चित्र।

300.00

INDIAN AESTHETICS and MUSICOLOGY

(*The Art & Science of Indian Music*)

Prof. Prem Lata Sharma

Rs. 500.00

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी

आचार्य तथा अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
डॉ० हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

संस्कृत साहित्य के इतिहास को विषय बनाकर अनेक ग्रन्थ भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में पिछले दो सौ वर्षों में लिखे गये हैं। संस्कृत साहित्य के बहुश्रुत अध्येता प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी का यह ग्रन्थ इस विषय में कतिपय नयी कड़ियाँ जोड़ता है और नये वातायन खोलता है। यहाँ अनेक ऐसे श्रेष्ठ काव्यों का परिचय जोड़ा गया है, जो अब तक उपेक्षित या अल्पचर्चित रहे हैं। पद्यचूडामणि (बुद्धघोष), चक्रपाणिविजय (भट्ट लक्ष्मीधर 10वीं शताब्दी) आदि महाकाव्यों की चर्चा संस्कृत साहित्य के इतिहासों में प्राय: नहीं की जाती है। इसी प्रकार संस्कृत में लोक-जीवन पर काव्य रचने वाले कवियों में योगेश्वर, अभिनंद, केशट जैसे कवियों की रचनाओं में प्रकट भारतीय जनजीवन की छवि को भी इस पुस्तक में विषय बनाया गया है। नाटकों में कुन्दमाला, प्रबुद्धरौहिणेय आदि की भी पुष्कल चर्चा पहली बार इस पुस्तक के द्वारा सामने आ सकी है। भीमट और अनंगहर्ष जैसे श्रेष्ठ नाटककारों का कृतित्व अभी तक अनदेखा रहा है। उस पर यहाँ दृष्टिपात किया गया है। मुद्राराक्षसकार विशाखदत्त की अल्पज्ञात और विलुप्त कृतियों के परिचय के द्वारा उनके कृतित्व के अछूते पक्ष यहाँ उन्मीलित हुए हैं। वीणावासवदत्तम् जैसी अज्ञात और अज्ञातकर्तृक कृति के विवेचन के द्वारा भारतीय नाट्य परम्परा की टूटी कड़ियों को यहाँ जोड़ने का प्रयास किया गया है। क्षेमीश्वर के चंडकौशिक की चर्चा ही अब तक होती आयी है, उनके दूसरे नाटक नैषधानंद पर नहीं। इन अज्ञात या उपेक्षित कृतियों व कृति कृतिकारों के साथ अनेक अल्पपरिचित या अज्ञातप्राय कवियों का भी परिचय यहाँ दिया गया है, जो महत्त्वपूर्ण हैं। संस्कृत साहित्य की परम्परा निरन्तर विकसित होती हुई परम्परा है। 10वीं शती के पश्चात संस्कृत काव्य के इतिहास को पश्चिमी विद्वानों ने ह्रास का युग मान कर उस पर मौन रखा। यह परम्परा भारतीय संस्कृत विद्वानों के द्वारा रचे गये संस्कृत साहित्य के इतिहासों में भी प्रचलित रही है। इसी प्रकार मध्यकालीन गद्य को अनदेखा किया जाता रहा है। कथा साहित्य की सम्पन्न परम्परा परवर्ती शताब्दियों में विकसित होती रही है। यह पुस्तक संस्कृत साहित्य की अनेक उपेक्षित परम्पराओं का भी आकलन प्रस्तुत करती है। इस इतिहास के लेखक ने सप्रमाण यह प्रदर्शित किया है कि संस्कृत कवियों ने अपने समय को अपनी रचनाओं में अनेक छवियों में व्यंजित किया है। संस्कृत कवियों के समकालिक बोध पर पहली बार इस कृति में ध्यान आकृष्ट कराया गया है। संस्कृत साहित्य की परम्परा के विषय में बनी हुई अनेक भ्रांतियों को भी यह पुस्तक तोड़ती है, तथा इस साहित्य में प्रतिबिंबित उदात्त जीवन मूल्यों तथा चिंतन परम्पराओं के सन्दर्भ में भी संस्कृत कवियों के अवदान, उपलब्धि तथा सीमाओं पर तेजस्वी विमर्श प्रस्तुत करती है। वैदिक साहित्य से बीसवीं शताब्दी तक विकसित संस्कृत साहित्य की परम्परा का यह आकलन छात्रों, सामान्य पाठकों तथा अनुसंधाताओं के लिए समान रूप से उपयोगी है।

विस्तृत ग्रन्थानुक्रमणिका तथा लेखकानुक्रमणिका सहित
डिमाई/8, पृ० 540
छात्र संस्करण : 200.00
पुस्तकालय संस्करण : 350.00

सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत

डॉ० माधवेन्द्रप्रसाद पाण्डेय

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग

नवगीत का सौन्दर्यबोध मूलत: भारतीय परिवेश का सौन्दर्यबोध है। इसमें आधुनिक जीवन की विषम परिस्थितियों का यथार्थपरक चित्रण हुआ है जो इसे विशिष्टता प्रदान करता है। नवगीत में आधुनिक जीवन की विविध समस्याओं की अभिव्यक्ति की शक्ति सन्निहित है। लय की सुरक्षा नवगीत का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है जिसकी सहायता से हिन्दी कविता का विकास जनता में गहराई तक हो सकता है और हिन्दी कविता का अक्षितिजीय विस्तार इसे अंतरराष्ट्रीय सरोकार प्रदान करता है।

आधुनिक हिन्दी काव्य के विकास का परिदृश्य करती महत्त्वपूर्ण कृति। **250.00**

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **अगस्त 2001** **अंक : 8**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in